Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue VII, July-2012, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

आदिकवि बाल्मीकि द्वारा प्रणीत आदिकाव्य रामायण के अनुसार मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जी का व्यक्तित्व

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IV, Issue VII, July-2012, ISSN 2230-7540

आदिकवि बाल्मीकि द्वारा प्रणीत आदिकाव्य रामायण के अनुसार मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जी का व्यक्तित्व

Dr. Praveen

Lecturer D.A.V. College, Sadora, Yamuna Nagar (Haryana)

आदिकालीन मनु जी के सात पुत्र थे जिनकी एक शाखा में महाराजा सगर, सुखमंजस, विरुत, कद्दीप, भगीरथ, अंशुमन, अनरण्य, नहुष, त्रिशंकु, दिलीप रघु और अज आदि थे तथा दूसरी शाखा में सत्यवादी हरिश्चन्द्र आदि हुए । वैवस्वत मनु के बाद सूर्यवंश की उनतालीस पीढ़ियों के बाद अयोध्या में दशरथ जी के यहाँ श्रीराम का जन्म हुआ । श्रीराम जी के चरित्र में ऐसे उत्तम गुण विद्यमान थे जिनके कारण लाखों वर्षों बाद भी उन्हें आज हर घर में याद किया जाता है । श्रीराम के जीवन में उनके पूर्वजों के आदर्श जीवन का प्रभाव हमें साफ दिखाई देता है । उनके दिव्य गुणों का प्रमाण हमें महर्षि बाल्मीकि और नारद जी की वार्ता से मिलता है । जब वाल्मीकी जी ने नारद से पूछा –

कोऽन्वस्मिन् साम्प्रतं लोके

गुणवान् कश्च वीर्यवान् ।

धर्मज्ञश्च कृतश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः ।।[1]

अर्थात् मुनिराज! इस समय संसार में गुणवान, धर्मज्ञ, शूरवीर, सत्यवादी, कृतज्ञ और दृढ़प्रतिज्ञा वाला मनुष्य कौन है? तो महामुनि नारद जी ने ऐसे व्यक्ति के रूप में श्री राम जी का ही नाम महर्षि जी के सम्मुख प्रस्तुत किया था तथा नारद जी से यह सुनने के बाद ही उन्होंने श्रीराम पर रामायण महाकाव्य लिखने का निर्णय लिया था। बाल्मीकि जी ने अपने ग्रन्थ में श्रीराम को वेदवेदांगतत्वज्ञः – वेद वेदांग के तत्तवेत्ता और सर्वविद्याव्रतस्नातो यथावत्सांगोवेदवित्–विद्या–व्रत स्नातक तथा यथावत् अंगों सहित वेद का जानने वाला कहा है । यही नहीं वे आगे राम के गुणों के बारे में महाराजा दशरथ से केकैयी को कहलवाते हैं :–

क्षमा यस्मिंस्तपस्त्यागः सत्यं धर्मकृतज्ञता ।

अप्यहिंसा च भूतानां तमृते का गतिर्मम ।।

अर्थात् हे केकैयी! जिस राम के अन्दर क्षमा, तप, त्याग, सत्य, धर्म और कृतज्ञता तथा प्राणियों के लिए दया है, उस राम के बिना मेरी क्या गति होगी? इन गुणों के अतिरिक्त बाल्मीकि जी ने श्रीराम जी को मर्यादित, शरणागत, आस्तिक, धार्मिक और निश्चयबुद्धि वाला कहा है ।

वैसे तो रामायण में वर्णित प्रत्येक व्यक्तित्व अपने आपमें अद्वितीय एवं अतुलनीय है परन्तु महाकाव्य के महानायक श्रीराम जी का आदर्श व्यक्तित्व तो अत्यन्त विलक्षणता से परिपूर्ण है । महाराज दशरथ के लिए चारों पुत्र ही प्रिय थे परन्तु भगवान राम के लिए विशेष अनुराग था और उस प्रेम का आधार श्रीराम जी का आदर्श व्यक्तित्व ही था । इस अद्भुत व्यक्तित्व का हमें रामायण में अनेक स्थानों पर परिचय मिलता है । अयोध्याकाण्ड में उन्हें ब्रह्मा के समान गुणवान् बताया गया है । अन्य गुणों की चर्चा करते हुए कहा गया है –

स हि रूपोपपन्नश्च वीर्यवाननसूयकः ।

भूमावनुपम सूनुर्गुणैर्दशरथोपमः ।।[2]

अर्थात् श्रीराम अत्यन्त रूपवान्, दुर्गुणों से रहित, पृथ्वी पर अनुपम और गुणों में दशरथ के ही समान थे । इसी क्रम में आगे कहा गया है –

स च नित्यं प्रशान्तात्मा मृदुपूर्वं च भाषते ।

उच्यमानोऽपि परुषं नोत्तरं प्रतिपद्यते ।।

कथंचिदुपकारेण कृतेनैकेन तुष्यति ।

न स्मरत्यपकाराणां शतमप्यात्मवत्तया ।।

सानुकाशो जितक्रोधो ब्राह्मण प्रतिपूजकः ।

दीनानुकम्पी धर्मज्ञो नित्यं प्रग्रहवा×छुचिः ।।

सम्यग्विद्याव्रतस्त्रातो यथावत्सा(वेदवित् ।

इष्वस्त्रे च पितुः श्रेष्ठो बभूव भरताग्रजः ।।[3]

अर्थात् वे सदा प्रसन्नचित रहते और सबसे मधुर बोलते थे । यदि कोई उनके प्रति कठोर वचन भी बोलता था तो भी वे प्रत्युत्तर में कोई कठोर बात नहीं करते थे । श्रीराम किसी प्रकार किए गए एक ही उपकार से संतुष्ट हो जाते थे और किसी ने उनके प्रति सैकड़ों उपकार किए हों तो भी उनका स्मरण न करते थे । वे दयालु क्रोध को वश में रखने वाले, ब्राह्मणों का सम्मान करने वाले, दीनों पर दया करने वाले, धर्म को जानने वाले जितेन्द्रिय एवं पवित्र थे । श्रीराम समस्त विधाओं और ब्रह्मचर्य व्रत में स्नान किए हुए अर्थात् विद्या स्नातक व

---

1. बाल काण्ड 1–10
2. अयोध्याकाण्ड, 1–9
3. वही, 1–10, 11, 15, 20

www.ignited.in

व्रतस्नातक थे । वे अंगों सहित वेदों को जानने वाले और बाण विद्या में अपने पिता जी से भी बढ़कर थे।

श्रीराम को राजा बनाने के पक्ष में अयोध्या की परिषद् ने श्रीराम जी के अनेक गुणों का वर्णन किया है । जिनमें से कुछ इस प्रकार विवेचित किए गये हैं ।

दिव्यगुणैः शक्रसमो रामः सत्यपराक्रमः ।

इक्ष्वाकुभ्योऽपि सर्वेभ्यो ह्यतिरिक्तो विशाम्पते ।।

रामः सत्पुरुषो लोके सत्यः धर्मपरायणः ।

गुणैर्विरोचते रामो दीप्तः सूर्य इवांशुभिः ।।[4]

अर्थात् सत्यपराक्रमी श्री राम दिव्य गुणों से इन्द्र के समान हैं। अतः वे इक्ष्वाकुवंशी राजाओं में सबसे श्रेष्ठ हैं । सत्यपरायण श्री राम लोक में वस्तुतः श्रेष्ठ पुरुष है । उन्हीं से धर्म और अर्थ की प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है । प्रजा को सुख देने में श्री राम चन्द्रमा के समान, क्षमा करने में पृथ्वी के समान, बुद्धि में बृहस्पति के तुल्य, पराक्रम में साक्षात् इन्द्र के समान हैं । वे धर्मज्ञ, सत्यवादी, शीलयुक्त, द्वेष से रहित, शान्त, दुःखियों को सान्त्वना देने वाले, मधुर भाषी, कृतज्ञ और जितेन्द्रिय हैं । मनुष्यों पर कोई विपत्ति आने पर वे स्वयं दुःखी होते हैं और उत्सव के समय पिता की भांति प्रसन्न होते हैं । श्रीराम जी हमेशा सत्यभाषी, महान धनुर्धर, बुढ़ों की सेवा करने वाले, जितेन्द्रिय, मुस्कराकर बोलने वाले और सब प्रकार से धर्म का सेवन करने वाले हैं । उनका क्रोध और प्रसन्नता कभी निरर्थक नहीं होता । वे वध करने योग्य का वध करते हैं और जिसका वध नहीं करना उस पर कभी क्रोध नहीं करते । वे यम–नियमादि पालन में कष्ट सहिष्णु हैं । प्रजा के प्यार के पात्र हैं। इन गुणों से अलंकृत श्री राम रश्मियों से युक्त सूर्य की भांति देदीप्यमान हैं । उनका जीवन पूर्णरूप से निःस्पृह, मर्यादित और त्यागमय था । उनके वीत–राग स्वभाव का सबसे उत्तम उदाहरण हमें उस समय मिलता है । जब राज्याभिषेक के स्थान पर उन्हें तुरन्त वन जाने की सूचना दी जाती है । उनकी उस समय की स्थिति के बारे में कहा गया है –

आहुतस्याभिषेकार्थं वनाय प्रास्थितस्य च ।

न लक्षितो मुखे तस्य स्वल्पोऽप्याकारविभ्रमः ।।

अर्थात् राज्याभिषेक की सुखद आज्ञा से न तो उनके मुख पर प्रसन्नता के चिन्ह् दिखाई दिए और राज्य के बदले वनवास की आज्ञा मिलने पर न ही उनके मुख पर विषाद के चिन्ह् दिखाई दिए। श्री राम चन्द्र जी स्वयं पर इस प्रकार के आदर्श व्यक्तित्व के स्वामी थे इसलिए अयोध्या का राज्य भी एक आदर्श राज्य था । रामायण के अन्त में रामराज्य का वर्णन करते हुए कहा गया है ।

न पर्यदेवन् विधवा न च व्यालकृतं भयम् ।

न व्याधिजं भयं चासीद्रामे राज्यं प्रशासति ।

आसन् प्रजा धर्मरता रामे शासति नानृताः ।

सर्वे लक्षणसम्पन्नाः सर्वे धर्मपरायणाः ।[5]

श्रीराम जी के राज्य में न तो विधवाओं का करुणा–क्रन्दन था न सर्पों का भय था और न ही रोगों का भय था । राज्यों में चोरों, डाकुओं और लुटेरों का कहीं नाम तक नहीं था । दूसरे के धन को लेने की बात तो दूर रही, कोई छूता तक नहीं था और राम के शासन काल में किसी वृद्ध ने किसी बालक का मृतक–संस्कार नहीं किया । रामराज्य में लोग अपने–अपने वर्णानुसार धर्मकृत्यों में तत्पर रहते थे अतः सब लोग सदा सुप्रसन्न रहते थे। श्रीराम दुःखी होंगे इस विचार से प्रजाजन परस्पर एक–दूसरे को दुःख नहीं देते थे । राम राज्य में लोगों की आयु दीर्घ होती थी और लोग बहुत पुत्रों से युक्त होते थे । सभी अयोध्या निवासी रोग तथा शोक से रहित दिखाई पड़ते थे । राम राज्य में वृक्ष सदा फूलते व फलते थे । उनकी शाखाएं लम्बी होती थी।। वर्षा यथा समय होती थी और सुखस्पर्शी मन्द समीर चला करती थी । ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शुद्र कोई भी लोभी प्रवृत्ति का नहीं था । सभी वर्ण अपना–अपना कर्म करते थे तथा सदा सन्तुष्ट रहते थे । मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम के राज्य में सारी प्रजा सत्य के साथ रहती थी और झूठ से हमेशा दूर रहती थी । सब लोग शुभगुणों से युक्त थे और सभी धर्मपरायण होते थे ।

[4]. अयोध्याकाण्ड, 2–28–47

[5]. युद्धकाण्ड, 28, 98–105

www.ignited.in